BA-III (④) 1
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पाँच

मैथिली साहित्यक इतिहास
(आधुनिक काल)

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

Topic:- मुंशी रघुनन्दन दास रचित महाकाव्य 'सुभद्रहरण':-

ई महाकाव्य प्राचीन परिपाटीक कविक महाभारत कथाक आधार पर लिखल गेल अछि। महाकाव्यमे काव्य शास्त्रक समावेश। रस लक्षणक निरूपण सरल ओ सहज भाषामे प्रयुक्त भेल अछि। उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारक विविध प्रसंगमे भेल अछि। प्रकृति वर्णनक संग-संग षड्ऋतु विशेषक मनोहारी वर्णनसँ काव्य मुखर भऽ उठल अछि। उलूपी-अर्जुनक प्रणयलीला वर्णनमे संयोग शृंगारक तथा अर्जुनक विरह कालमे उलूपी द्वारा व्यक्त व्यथाक वर्णनमे वियोग शृंगारक प्रयोग सँ ई महाकाव्य शृंगार रस प्रधान भेल अछि। डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार - "मुंशीजी मुख्यतः संस्कृत वर्णवृत्तामे एकर रचना कएने छथि। अतः छन्दक आग्रहें हिनक भाषा विकृत भए गेल अछि तथा हिन्दीक उत्कट प्रभाव महाकाव्यक प्रभावकें हानि करैत प्रतीत होइत अछि। एकर नाम निक 'सुभद्राहरण', मुदा एहिमे ओतेक कथाक वर्णित नहि भए अर्जुनक समग्र निर्वासनसँ सम्बद्ध कथा निबद्ध अछि। अतः एहू मध्य वर्णन पर विशेष ध्यान देल गेल अछि, चरित्र-चित्रण वा कथाक

Scanned by TapScanner

एकरूपता पर नहि। हिनक प्रकृतिवर्णन बड़ सुन्दर अछि। उदाहरणक हेतु शरदक निम्नलिखित वर्णन द्रष्टव्य थिक —

"शारीक सरले शोभा शोभमाने अकाशे।
अभिजित नक्षत्रालिकिं लखु नाहि पाले।
सुखद शरद आएल कुज्झाकोकिल स्वर्ले।
रघुनन्दन वृन्दारक कीरा अनूपे।"

संदर्भ:- मैथिली साहित्य इतिहास पृष्ठ 229

एहि महाकाव्यक कथा अछि - एक गोट ब्राह्मणक गायक चोरि भऽ जाइत छनि गायकेँ चोरसँ मुक्त करेबाक निमित्त ब्राह्मण राज दरबारमे प्रार्थी होइत छथि। युधिष्ठिर द्रौपदीक संग जाहिमे घरमे सूतल छथि ताहि घरमे शस्त्रास्त्र राखल छैक। शर्तक अनुसार ओहि घरमे कोनो दोसर जँ प्रवेश करत तँ बारह वर्ष पर्यन्त बनवास यातना सहय पड़तनि। प्रायश्चित स्वरूप अर्जुन बारह वर्षक बनवासक हेतु निकलि पड़ैत छथि। भ्रमण क्रममे प्रभास तीर्थमे श्रीकृष्णसँ भेँट होइत छनि ओतयसँ श्रीकृष्ण अर्जुनकेँ द्वारका लऽ जाइत छथि। सत्यभामाक सहायतासँ बलरामक विरोधक बादो सुभद्राहरणक आ पश्चात् सुभद्राक संग अर्जुनक विवाह होइत अछि।

Sanjit Kumar